डरना मना है

अभिशप्त नीलम

हेमेन्द्र कुमार राय

अनुवादक

जयदीप शेखर

Cover Photo Credit: Image by halayalex on Freepik

अभिशप्त नीलम

बँगला डरावनी कहानी 'सर्बनाशा नीला' का हिन्दी अनुवाद

मूल लेखक

हेमेन्द्र कुमार राय

अनुवादक

जयदीप शेखर

PREVIEW COPY

जगप्रभा

Cover Photo Credit: decorated-statue-traditional-hindu-god-bali-indonesia_26730925. Image by halayalex on Freepik

-: eBook :-

Abhishapta Neelam: The Curse of the Shaffire

Hindi translation of the Bengali horror story 'Sarbanasha Neela.'

Original author: Hemendra Kumar Roy (1888-1963)

Hindi translation: Jaydeep Das

(Pen name- Jaydeep Shekhar)

Copyright © 2023 Translator

Published by:

JagPrabha

Barharwa (SBG), JH- 816101

jagprabha.in | jagprabha.bhw@gmail.com

Price: ₹ 75.00

हेमेन्द्र कुमार राय

(1888 - 1963)

बँगला में किशोर-साहित्य के एक लोकप्रिय कथाकार। बाल-किशोरों के लिए सैकड़ों कहानियों एवं लघु उपन्यासों की रचना की- बड़ों के लिए भी बहुत कुछ लिखा। 1930 से 1960 के दशकों में उनकी कहानियों के बिना बाल-किशोर पत्रिकाएं अधूरी-सी लगती थीं। मुख्यरूप से उन्होंने दुस्साहसिक (Adventure), जासूसी (Detective) और परालौकिक (Supernatural), कहानियाँ लिखी हैं। कहानियों में रहस्य (Mystery), रोमांच (Thrill) और भय (Horror) का ऐसा पुट होता है कि दम साधकर कहानियों को पढ़ना पड़ता है। कुछ कहानियाँ खजाने की खोज (Treasure hunt) और वैज्ञानिक कपोल-कल्पना (Science-fiction) पर भी आधारित हैं। उनकी रची 'कुमार-बिमल' और 'जयन्त-माणिक' श्रृंखलाएं अपने समय में बहुत लोकप्रिय हुई थीं- पहली दुस्साहसिक कहानियों की तथा दूसरी जासूसी कहानियों की श्रृंखला है। उनकी रची परालौकिक कहानियों को पढ़ने का अलग ही रोमांच है।

***

अभिशप्त नीलम.....6
प्रथम दृश्य.....6
द्वितीय दृश्य.....13
तृतीय दृश्य.....19
चतुर्थ दृश्य.....25
पञ्चम दृश्य.....32

अभिशप्त नीलम

प्रथम दृश्य

प्रथम दृश्य की यवनिका के पीछे सन्ध्या के धुंधलके में जो दृश्यपट उभर रहा है, उसमें आनन्दमुखर उत्साह-दीप्ति की चकाचौंध नहीं है, किसी भयावह विभीषिका के घटने का संकेत भी नजर नहीं आ रहा है, केवल एक सन्दिग्ध आशंका की छाया का अनुभव हो रहा है। कुछ सुनायी नहीं पड़ रहा है, दिखायी नहीं पड़ रहा है। एक गूढ़ जिज्ञासा मानो अशरीरी प्रेत के समान रहस्यमयी अन्धेरे के द्वार पर झलक दिखाकर चली जा रही है और वातावरण किसी छुपे हुए आतंक की कल्पना से सिहर जा रहा है।

महानगरी कोलकाता के उत्तरी अंचल में नाममात्र की रोशनी वाली एक अन्धी गली। सारे जहां में चहल-पहल और आपाधापी का सागर लहरा है, उस सागर की लहरें मानो यहाँ आकर दम तोड़ देती हैं- मामूली एक तरंग उत्पन्न करके। इस अन्धी गली में एक पुराना बड़ा-सा मकान है। मकान का छोटा-सा दरवाजा खुलने पर लगता है- एक भूखी गुफा मानो मुँह खोलकर लालची निगाहों से सब कुछ खा जाना चाहती हो। नीचे के कमरे का सीलन भरा अन्धकार पातालपुरी के दुर्गम सुरंग का आभास कराता है। कोलाहल-मुखर सन्ध्या का कोलकाता इस वीरान मकान की चौखट पर मानो लड़खड़ा कर मुँह के बल गिरकर दम तोड़ चुका हो।

मकान दुमंजिला है, नीचे के कमरों में कोई नहीं रहता; ऊपर कोई रहता जरूर है, लेकिन उसे बाहर से देखा नहीं जा सकता। दुमंजिले पर अन्दर की तरफ एक सुसज्जित हॉलनुमा कमरा। कमरे में अन्धेरा है, एक दीवार घड़ी की लगातार टिक्-टिक् केवल अन्तहीन कालप्रवाह की सूचना दे रही है। इस मूर्छित वातावरण में भी अब भी कहीं प्राण है- यह टिक्-टिक् शब्द मानो उसी का विमूढ़ स्पन्दन है। कमरे के प्रत्येक टेबल-चेयर में, दर्पण-आलमारी में, ड्रॉअर-दराज में, सारे असबाब में जाने कितने जटिल षड्यंत्र, कुटिल कुचक्र, अनगिनत गोपनीयता मानो कुण्डली मारकर लिपटी हुई हैं- हत्थों-पायों में, रन्ध्र-रन्ध्र में, पोर-पोर में! कितनी गूढ़ दुरभिसन्धियाँ क्रूर संकल्प, वज्रमुष्टि और दबे आक्रोश के साथ यहाँ

रची गयी हैं- इनकी गवाही कमरे के दरवाजों, खिड़कियों, धरण और दीवारों के अलावे और कौन दे सकता है?

कमरे में अन्धेरा है- सूचीभेद्य अन्धकार। किसी के श्वास-निश्वास की आवाज सुनायी पड़ रही है। इन्सान ही है तो? तो क्या अन्धकार भी श्वास लेता है? या, कुछ और तो नहीं? फर्श पर जूते के पदचाप की आहट हुई। अचानक स्वीच दबाये जाने की आवाज के साथ बिजली की रोशनी ने मानो सारे कमरे को एक झटके में मूर्छा से जगा दिया। आँखें मलते ही दिखायी पड़ा- एक आदमी ने भौंहों को सिकोड़ कर उत्कण्ठित नजरों से दीवार घड़ी की ओर देखा। फिर भींचे हुए जबड़े में से 'हूँ- ' आवाज निकालने के बाद रेडियो की चाबी की तरफ उसने अपना हाथ बढ़ा दिया। गूँगा मकान चौंककर रेडियो की आवाज से मुखरित हो गया। एकमात्र श्रोता स्वानामधन्य पन्नालाल ने चिन्ता त्याग कर रेडियो से प्रसारित नाटिका पर ध्यान केन्द्रित करने की कोशिश की। रेडियो पर श्रीराधिका के साथ चन्द्रावली का वार्तालाप चल रहा था-

राधिका: सुनो-सुनो चन्द्रावली तन्द्रामाथा कुन्दकली
वृन्दावन-चन्द्र आज नहीं वृन्दावन में,
मन्दवायु गन्धहारा कोकिल हुई छन्दहारा
निरानन्द घन मेघ पुकारे चन्द्रानन में।
चन्द्रावली: कृष्ण भारी दुष्ट सुजन कष्ट देकर हँसे
जो उससे नेह लगाये अंसुअन जल में धँसे।

श्रीराधिका का हाहाकार और चन्द्रावली की सान्त्वना रेडियो में जारी था, लेकिन यह श्रोता पन्नालाल के कानों में जैसे प्रवेश नहीं कर रहा था। उसके चेहरे पर उद्विग्नता की छाया मँडरा रही थी। चिन्ता की कोई पहाड़ी नदी उसके मन में बल खाते हुए बह रही थी। वह उत्कीर्ण हो बैठा था, फिर भी रेडियो की आवाज जैसे उसे ठीक से आकर्षित नहीं कर पा रही थी। रेडियो भी चालू था-

राधिका: मथुरा में जाने कितना मधु मिल गया उन्हें
टूटे हृदय से व्यर्थ कर रही मैं हाहाकार,
इतना जपूँ श्याम नाम फिर भी मोरे विधि वाम,
राधा-राधा करके बाँसुरी नहीं पुकारती और।
चन्द्रावली:मत सोचो भूलो बंशी की बात क्या है उसका मोल?
अब से बजेगी बेसुरी जब से वह गया तुम्हें भूल।

उत्तेजित पन्नालाल उठ खड़ा हुआ। कमरे में चहलकदमी करने लगा- बहुत ही अधीरता के साथ! खिड़की की झिलमिली खोल उत्सुकता के साथ बाहर झाँककर कुछ देखा उसने। फिर जाकर बैठ गया। पास में रेडियो पर नाटिका उसी तरह जारी थी-

राधिका: अब तो यमुना कूल के जल को भूल नहीं सकती
कलशी बहा दूँगी अब तो नहीं रहा कन्हाई!
घनघोर वर्षा में वायु करता हाय-हाय
अपनी दुखती बातें हाय किसको बताऊँ?
चन्द्रावली:जब बिछोह हो ही गया तो आज से कर लो कुट्टी
रात आधी हुई शायद चलो घर को करो छुट्टी
राधिका: हाय वे आँखें दोनों नीलम-जैसी.....

अत्यधिक झल्लाहट के साथ पन्नालाल ने रेडियो को खट्-से बन्द कर दिया। अपने आप से वह बोल पड़ा, "धत्त तेरी, राधा का यह पुराना रोना-धोना अब अच्छा नहीं लगता, लेकिन अन्तिम बातें अच्छी लगीं- 'वे आँखें दोनों नीलम-जैसी!' हाँ नीलम- नीलम! वैसे, दो-दो नीलम कुछ ज्यादा हो गया, एक नीलम पाने से ही मेरा हो जायेगा! –सिर्फ एक- एकमात्र नीलम!"

कहते-कहते पन्नालाल भाव-विभोर हो गया। सुदूर किसी भयानक जगह में उसकी कल्पना मानो एक अभियान पर निकल पड़ी हो।.... बाहर से दरवाजे पर हल्की खटखटाहट हुई। किसी शिकारी बिल्ली के समान वह सतर्क, तत्पर हो उठा, उसकी दोनों आँखें जल उठीं। दरवाजे फिर एक बार दस्तक होने के बाद उसने गम्भीर स्वर में पूछा, "कौन है?"

आगन्तुक का उत्तर सुनायी पड़ा, "अरे, मैं सोहनलाल हूँ।"

पन्नालाल सहज होते हुए बोला, "आन्दर आ जाओ।"

सोहनलाल ने कमरे में प्रवेश किया। तीक्ष्ण दृष्टि पन्नालाल के चेहरे पर डालकर उसने कुछ समझने की चेष्टा की, फिर अगले ही पल पूछा, "मुझे बुलवाया है?"

पन्नालाल: "हाँ, बैठो। एक बात है।"

सोहनलाल: "तुम्हारे चेहरे पर चिन्ता की लकीरें क्यों हैं?"

उत्कण्ठित पन्नालाल ने एक नजर दीवार-घड़ी पर डाली, फिर चिन्तित स्वर में बोला-

"रात के नौ बज गये। चुनीलाल और हीरालाल अभी तक नहीं पहुँचे! एक जरूरी काम से दोनों को कोलकाता से बाहर भेज रखा है। ट्रेन का समय हुए तो काफी देर हो गया!"

सोहनलाल: "तुम्हारे जरूरी काम का मतलब ही है- खतरे वाला काम! हो सकता है, वे किसी खतरे में पड़ गये हों।"

पन्नालाल: "खतरा? हूँ, हो भी सकता है! लेकिन उनका खतरे में पड़ने का मतलब है- मेरे लिए भी खतरा!"

सोहनलाल के पल्ले कुछ पड़ नहीं रहा था। वह सपाट स्वर में बोला-

"देखो पन्नालाल, मैं मामला समझ नहीं पा रहा हूँ। पहले सारी बातें खोलकर बताओ तो।"

पन्नालाल ने पहले तो सोहनलाल के चेहरे पर एक प्रखर दृष्टि डालकर कुछ सोचा, फिर अपनी कल्पना में रहस्यमयी इस मामले की शुरू से अब तक की विवेचना की। इस दौरान अन्यमनस्क हुआ वह, जैसे- किसी खतरनाक दुस्साहसिकता में वह खो गया हो। इसके बाद होंठों एवं आँखों में हँसी की एक रेखा खींचते हुए गम्भीर स्वर में धीरे-धीरे वह बोलने लगा-

"हाँ, तो बहुत संक्षेप में ही बताता हूँ- सुनो। सन्थाल-परगना के एक पहाड़ की किसी गुफा में एक अद्भुत किस्म के देवता हैं। सन्थाल लोग बहुत तरह के भूतों की पूजा करते हैं, यह देवता भी एक भूत है। ऐरा-गैरा भूत नहीं, वास्तव में एक दुष्ट प्रेतात्मा! लकड़ी की करीब बारह फूट ऊँची एक प्रतिमा है, जिस पर रंग किया हुआ है। चेहरा उसका इतना भयानक है कि देखकर खून जमकर बर्फ बन जाय! मूर्ति भले लकड़ी की है, लेकिन उसके गले से लटकती माला में एक आश्चर्यजनक नीलम पिरोया हुआ है। यह नीलम कोई डेढ़ सौ कैरेट का है!"

सोहनलाल की आँखें मानो कोटरों से उछल कर बाहर गयीं! बहुत ही उत्तेजित होकर उसने अपने विस्मय को प्रकट किया-

"डे-ढ़-स-औ- कैरेट! क्या कह रहे हो? ...फ्रान्सीसी गवर्नमेण्ट ने एक बार बाँग्लादेश से एक सौ कैरेट का एक नीलम खरीदा था, उसी का दाम तो एक लाख दो हजार रुपया था!"

पन्नालाल: "तो फिर इस नीलम का दाम कितना होगा- सोचकर देखो!"

सोहनलाल: "गरीब सन्थालों को इतना कीमती नीलम मिला कहाँ से?"

पन्नालाल: “यह कोई नहीं जानता। वह भूत-देवता अति प्राचीन भूत है, उम्र उसकी लगभग तीन सौ साल है। सन्थालों का मानना है कि उनके देवता इस नीलम के साथ ही परलोक से इहलोक में अवतीर्ण हुए थे। वैसे, नीलम वाली बात वे किसी को नहीं बताते, मुझे संयोगवश इसकी जानकारी मिली थी।”

सोहनलाल: “समझ गया। रतन ही रतन को पहचानता है। जानकारी पाते ही नीलम चुराने के लिए तुमने चुनीलाल और हीरालाल को रवाना कर दिया- क्यों?”

गर्वभरी मुस्कान के साथ पन्नालाल बोला-

“हाँ, ठीक समझे हो तुम। उन्हें इसी काम के लिए भेजा है। इस तरह के कामों में दोनों कितने उस्ताद हैं- यह तो तुम जानते ही होगे?”

स्वर में व्यंग्य घोलते हुए हुए सोहनलाल ने तुरन्त कहा-

“हाँ-हाँ, क्यों नहीं जानूँगा? अच्छी तरह से जानता हूँ, वे ही तो तुम्हारे दाहिने और बाँये हाथ हैं। उन्हीं के बल पर कोलकाता की सड़कों पर तुम्हारी चार-चार मोटरगाड़ियाँ दौड़ती हैं और तुम्हारे दरवाजे पर चापलूसों की भीड़ जुटती है!”

सिर हिलाते हुए पन्नालाल ने संशोधन किया-

“तुम्हारी यह बात ठीक नहीं रही सोहनलाल! वे मेरे सैनिक हैं, मैं उनका सेनापति। बुद्धी मैं ही देता हूँ उन्हें!”

बातचीत व्यक्तिगत न हो जाय- इस बारे में सोहनलाल सतर्क हुआ। नीलम के प्रति कौतूहल वाली बात पर वापस लौटते हुए उसने कहा-

“बात सही है, लेकिन पन्नालाल, सवाल यह है कि चुनीलाल और हीरालाल उस नीलम को चुरायेंगे कैसे? सन्थालों ने इतने बहुमूल्य रत्न को यूँ ही खुला तो नहीं रख छोड़ा होगा!”

पन्नालाल ने सोहनलाल की आशंका को दूर करते हुए बताया-

“हाँ सोहनलाल, वह नीलम किसी लावारिस सामान की तरह यूँ ही खुला पड़ा हुआ है। सन्थालों के बीच भी शायद कोई लोभी हो सकता है, लेकिन उस भूत-देवता से वे यमराज की तरह डरते हैं। उनका दृढ़ विश्वास है कि जो उस नीलम को चुरायेगा, उसका सर्वनाश हो जायेगा!”

सोहनलाल की जिज्ञासा बढ़ी, उसने पूछा-

“ऐसे विश्वास का कारण?”